



INDIRA GANDHI NATIONAL OPEN UNIVERSITY

Assignment Submission for Term-End Exam June - 2024

ENROLLMENT NUMBER

: 2 2 5 4 7 0 3 0 8 2

NAME OF THE STUDENT

: NIKITA CHAUHAN

STUDENT ADDRESS

: Akbarpur Bahadarpur, Ghaziabad, UP

PROGRAMME TITLE & CODE

: MHD: Master of Arts (Hindi)

COURSE TITLE

: Hindi Bhase Aur Bhaga Vigyan

COURSE CODE

: MHD-07

REGIONAL CENTRE NAME & CODE:

: 07: Delhi 1 (Mohonestate (South Delhi))

STUDY CENTRE NAME & CODE

: 0710: Deshbhandhu College (J10)

MOBILE NUMBER

: 7 3 0 3 8 2 2 4 1 2

E-MAIL ID

: nikitachauhan7838@gmail.com

DATE OF SUBMISSION: --04-2024

Nikitachauhan
(SIGNATURE OF THE STUDENT)



इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली - 110068
Indira Gandhi National Open University
Maidan Garhi, New Delhi - 110068



IGNOU - Student Identity Card

Enrolment Number : 2254703082

RC Code : 07: DELHI 1 (MOHAN ESTATE (SOUTH DELHI))

Name of the
Programme : MHD : MASTER OF ARTS (HINDI)

Name : NIKITA CHAUHAN

Father's Name : VEERPAL SINGH CHAUHAN

2254703082

Address : HOUSE NO 186 GALI NO 2 , BUDH VIHAR
AKBARPUR BAHARAMPUR

GHAZIABAD GHAZIABAD UTTAR PRADESH

Pin Code : 201009

Instructions :

1. This card should be produced on demand at the Study Center, Examination Center or any other Establishment of IGNOU to use its facilities.
2. The facilities would be available only relating to the Programme/course for which the student is registered.
3. This ID Card is generated online. Students are advised to take a color print of this ID Card and get it laminated.
4. The student details can be cross checked with the QR Code at www.ignou.ac.in



Registrar
Student Registration Division

एम.ए. हिंदी (एम.एच.डी.)
प्रारूपक्रम कोड : एम.एच.डी.-07
(हिंदी भाषा और भाषाविज्ञान)

सत्रीय कार्य (जुलाई-2023 और जनवरी-2024) सत्रों के लिए
जुलाई-2023 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 31 मार्च, 2024
जनवरी-2024 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 30 सितम्बर, 2024



मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110068

एम.एच.डी.-07 : हिंदी भाषा और भाषाविज्ञान
 सत्रीय कार्य 2023-24
 (सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.-07 / एम.एच.डी.
 सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.-07 / टी.एम.ए / 2023-24

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 1000 शब्दों में दीजिए।
 - क) संचार और संप्रेषण की संकल्पनाएँ स्पष्ट कीजिए। 15
 - ख) भाषा के बारे में चॉम्स्की के भाषा विचारों का विवेचन कीजिए। 15
 - ग) हिंदी में स्वर और व्यंजन ध्वनियों का परिचय दीजिए। 15
 - घ) तुलनात्मक भाषा विज्ञान का प्रारंभ कैसे हुआ और उसका क्या योगदान है? 15
2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।
 - क) अनप्रयुक्त भाषा विज्ञान 10
 - ख) बहुभाषिकता और द्विभाषिकता की सोदाहरण व्याख्या कीजिए। 10
3. निम्नलिखित पर लगभग 250 शब्दों में टिप्पणी लिखिए।
 - क) भाषा के प्रकार्य 5
 - ख) अर्थ परिवर्तन 5
 - ग) खंडेतर ध्वनियाँ 5
 - घ) पदबंध की संकल्पना 5

भू. एव. डी. - 07

हिंदी भाषा और भाषाविज्ञान

१) विभिन्न लेखित प्रश्नों के उत्तर 1000 शब्दों में दिये।

(क) संयार और संप्रेषण की सकल्पनाओं स्पष्ट लीजिए।

- संयार एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्याप्तियों, भूमुहों एवं विभागों के बीच सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है। लक्षित अर्थ के व्याप्ति द्वारा आवश्यक उपादनों को संयार माध्यम करा जाता है। विचारों की आनियमिती पाहे वह संघर्ष स्वरूप उपर्युक्त विचारों का संप्रेषण है। संयार एक आधुनिक विज्ञान युग की अवधि १९०० से इसका शुरूआतीय उद्देश्य यह होता है कि भृत्य भौतिकी संप्रेषण की भूमिका एवं उसके विवरण के अनुसार सभी जैसा कि संयार की अपेक्षा नहीं होता है। संयार वर्ती प्रभावी होता है जब उसके घटकों में किसी प्रकार की अपूर्णता न हो। संयार के साथ या युगानुस्यप विज्ञान के विस्तार होता जा रहा है। आधुनिक वैज्ञानिक विनायक ने संयार साथ लोगों जो तकनीकी रूप से वहाँ प्रभावपूर्व बढ़ा दिया है कि अब व्याप्ति-व्याप्ति के बीच सीमित संयार वै सम्पूर्ण विषय जो अपने प्रभाव-दृष्टि में ले लिया है। प्रभावी साथ लोगों - सेटेलाइट, टेलीफोन, भोजाइल, टी-वी, बैटरी, रिडियो, अखबार इत्यादि ने अनियमिती की विवरत्यापी व्याप्ति जो सकारात्मक दिखाया है। भाषा अपने भूमि प्राकार्य में संप्रेषण का अव्यतम साधन है।

मनुष्य अपने आभियानी भावों अथवा विवारों को संवाहित-संचारित कर श्रीता में प्रतिक्रिया उत्पन्न लगता है। यही 'संप्रेषण' लगता है। अधिक भंप्रेषण वह क्रिया-व्यापार है, जिसके तहत मनुष्य अपने भावों एवं विवारों की आभियानी तरह एक सुविचास्पृष्ट कोड-प्रणाली (भाषा) के माध्यम से श्रीता को इस अर्थ की प्रतीक्षा करता है। यह संप्रेषण-व्यापार ध्वनिशहित तथा ध्वनिशहित दोनों ही खलाएँ का हो सकता है। किंतु 'भाषा' मनुष्य के भट्टिल से भट्टिल विवारों के भंप्रेषण का भवसे संशक्त माध्यम है।

अतः संचार एवं भंप्रेषण का अर्थ यही इस संचारित अंतर्य का साधक रूप से लेय करता है। अंग्रेजी में इसे communication तथा हिन्दी में संचार अथवा भंप्रेषण लह जाता है। भंप्रेषण एवं संचार में जोई विशेष तात्त्विक अंतर नहीं है। दोनों का अद्य दो भाषिक अपवा भाषिकतर आभियानी है।

संचार अपवा भंप्रेषण की प्रक्रिया के अंतर्गत निम्नलिखित प्रमुख घटकों की महत्वपूर्ण उपादेयता है, जिनके बिना संचार अव्यूह नहीं जाता। ऐसे अर्थ का लोब्य पूर्णिष्ठ नहीं हो सकेगा एवं— वक्ता, श्रीता, सदेश, संदर्भ, संज्ञि, कोड (भाषा) आदि भंप्रेषण-व्यापार में वक्ता और श्रीता का होना आवश्यक है। वक्ता अपने विवारों को व्यक्त करता है। तथा श्रीता उसे ग्रहण करता है। इस प्रक्रिया में संदर्भ एवं प्रयोग्यता का होना आवश्यक है। अव्यूह बिना किवा संचय के निर्धनक वक्तात्व भी भंप्रेषण में लाला वक्ता अपने विवारों को व्यक्त करता है। तथा श्रीता उसे ग्रहण करता है। इस प्रक्रिया के संदर्भ एवं प्रयोग्यता का होना आवश्यक है। अव्यूह बिना संचय के निर्धनक वक्तात्व भी भंप्रेषण में लाला उत्पन्न करता है। इसे आरेक के माध्यम से समझा जा सकता है:—

आज हम जिस जनसंघार तथा भूपता भाष्यकी बात गवात हैं, १६ लिखित भाष्यको की अपेक्षा मात्रिक अधिक है। यह भाष्यकृति १७ तकाले प्रतिक्रिया उल्लेख करते वाला साधन है। संदेश के आवान-प्रदान के लिए यह अक्सर कारबर संप्रेषण तकनीक है, जिसके माध्यम से भूपता भाष्यकी में क्रांतिकारी उपलाद्य दासिल हुई है, किन्तु इस साधन के कुछ लेप हैं। नीरिक पक्षत्व क्षणिक होता है तथा विश्वनीय १७ वीधिकालीक वही होता है। किन जी भाषा के लिए पक्षों का भाष्य भाषाविज्ञान अध्ययन करता है, वे नीरिक १७ प्रवलित रूप हैं। अतः भाष्यकी में संप्रेषण का यह माध्यम अक्सर ज्यादा उपयोगी है।

D) लिखित संपादन :- संदेश को लिखित रूप में शापित करने की प्रक्रिया को लिखित संप्रेषण कहा जाता है। सुरक्षित, स्थायी तथा कालातीत होने के बाबन लिखित संप्रेषण का महत्व उपस्थापित होता है। लिखित संपादन माध्यमों के अंतर्गत पीडी, डिजिटल, ई-मेल, ऐप्स (apps), व्हायर, विफिन, भूपता, निम्नभाषी, साइट, लाइ-विजाव, विडियो, आणि अनेको इन्वाइट भाष्यक आते हैं।

संपादन के लिखित रूप की प्रक्रिया अले ही सभ्य जगते वाली प्राप्तिया है किन्तु यह वीधिकाल तक संरक्षित १८ संकाती है। प्रिन्ट भीडिया के माध्यम से पीडी-प्रिन्टिंगों पर अखबार द्वारा संपादन का प्रभावपूर्ण रूप उपस्थित होता है। यह संगृहीत संप्रेषण माध्यम है, जिसमें प्राचीन इतिहास वेतन तथ्यों १९ सामाजिक-सांस्कृतिक व्यावहारिकों को विद्यि-विद्यि सुरक्षित १९वा घा रखता है। प्राचीन व्यावहारिक और भेद का आदि ग्रंथ लिखित रूप में आर्यों द्वारा प्रस्तुत होते हों तथा आशा 'प्राक्षिप्त भृश' पर विवाद न खेला जाए। संपादन अंतर संप्रेषण एक सार्वभाषीय प्रक्रिया है, जो भाष्यकी के माध्यम से भाष्यकी-भाष्यकी को जोड़ने का गर्व करती है। तथा भाष्यकी के क्रियाएँ में भाष्यकी भाष्यकी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

किसी भी धरण के किसी भी भाषण का विषय के नोट-बॉक में
पहुँच जान एक 'जोड़ने वाले शब्दों' साति है, जो संवार के साथ से
भी ही संबंध हो सकते हैं।

अतः संवार तथा संप्रेषण के लिए आवश्यकता ने विस्तृत एवं विविक
एप प्रवान करने में विस्तर विकसित आवारों का प्रयोग किया जा
रहा है। संवार का लोक अल्पत व्यापक है। उसके संबंध में विस्तृत
संवार का विवरण उसके साथ ही ज्ञानी सार्वत है। अतः संप्रेषण तथा
संवार की संकल्पना उसके साथ से पर टिकी हुई है। आधुनिक आधा
रिकार्डों ने आधा और संप्रेषण को आजीन मानते हुए आधिक और
आधितर लोक आवश्यकताओं ने ही संप्रेषण का महत्वपूर्ण अंश माना है।
इस दृष्टि से यह माना जाता है कि अमीन-भाषा-समाज में आधितर
संप्रेषण की अपनी विशिष्ट भूमिका रहती है, जो उस समाज की समस्तति
की बाहक रहती है। संप्रेषण एक सामाजिक आधा-भवधार है, जो
अपने विविध धरणों के माध्यम से समाज में विचारों का आदान-
प्रदान करता है।

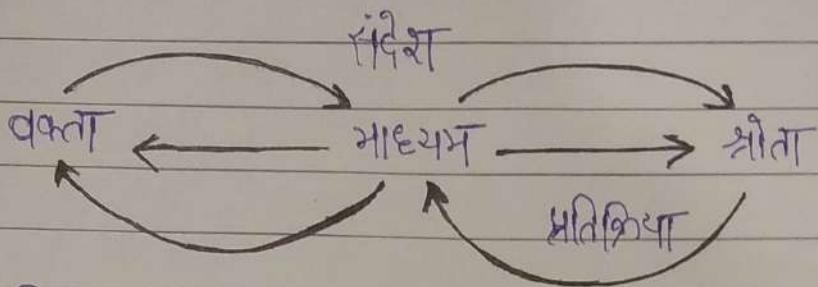
मानव समाज के विकास के साथ साथ संप्रेषण ने साथने जी
भी विकास की लकड़ी-पली। संप्रेषण का विकास एक प्रकार से समाज
के विकास का घोड़ा है। संवार, संप्रेषण जी आधुनिक तकनीक
से विभिन्न संकल्पना है। आरंभ में व्यक्ति-व्यक्ति के बीच आपसी
संवाद के रूप में व्यक्ति-संप्रेषण ने जब व्यासायिक रूप १९००
के दशकों में ज्ञान तथा ज्ञान का संचयन करने की शुरू की गई तो
संप्रेषण के विकास को विस्तृत एवं अवसुलभ बना दिया ही है। इस प्रकार
संप्रेषण के विकास का विवरण इस भाव से प्रभावित रहता है कि
संप्रेषण का लोक क्रितना विस्तृत हुआ है।

आधा के लिए मैं पांसकी को आधा विवारों का विवेचन कीजिए।
शुभसिद्धि आधाविद् शास्त्रकी का जेनरेटिव अमर के सिद्धांत का
प्रतिपादक हैं विसर्वी भट्टी के भवोविज्ञान में आवस्त्रे का अध्यात्मकी
भाना आता है। वे आधा जो आदत नहीं आनत कर्त्ति आज तक
दीती तो उसी प्राणी द्वारी इह जीलता। आधा जी आदत या व्यष्टिर
दृश्य अर्बन के विशेष में पांसकी आधा जी सूखवात्मका पर जल देते
हैं। इनके द्वारा मृत्युवित सूखवात्मक मन जी धमता जो आशीर्वाद
जरती है।

पांसकी भौतिक्य का आधा किंग्स सिद्धांत आधा जी लेन्ड किया गया
प्रतिपादन विशेष प्रासीद्धि है। पांसकी जो आधा विज्ञान का खलके आला आता
है। आधुनिक आधा के घरके के साथ-साथ आधाविद् या आधा भवोविज्ञानक
के घरके इप में जाना आता है। ३० होने के आधा विज्ञान का व्यव्ययन
सर्वप्रवात्मक आधाविज्ञान जी पंशपरा में ही शुरू किया या लेन्ड के
स्पनाइमक अध्ययन से अततेः विशेष में द्वारा स्पनाइमक व्यव्ययन
से अततेः विशेष द्वारा भवोविज्ञान जी पंशपरा में ही शुरू किया या लेन्ड
इसी के परिप्रेक्षण में आधा संबंधित अवधारणा को प्रतिपादित जरती है।
आधाविद् ज्यूम कीज्ज अवधारणा है तो पांसकी भवोवादी। वे आधा जी
आदत और अर्थ से पूरक इपला विश्वास विशेषी है। वे आधा जो आर्टिष्ट
थेलेट के मार्टिफेक में आनत है। उन्हों द्वारा प्रस्तुत रूप असामान्या
विश्वासमानिक व्याज्ञान शिद्धांत ज्यूमफीज की जारी आव्याहारीं जो खड़ित
करते हुए आधा के विश्लेषण, अर्बन आदि के सर्वमें जीवीत
व्याज्ञान प्रस्तुत जरती हैं।

पांसकी के आधा सिद्धांत

पांसकी भौतिक्य तथा उनके
अध्यवाद के विद्वानों का आनन्द या आधा जगत्वात शुरू है, जो सिर्फ



उपर्युक्त आरेख में वक्ता एवं श्रीता संबंधी एवं प्रतिक्रिया के अनुरूप अपनी वृद्धिता रहते हैं। अर्थात् वक्ता नभी श्रीता तो श्रीता नभी वक्ता वह ज्ञाता है।

संयार एवं संप्रेषण एक अत्यन्त प्रक्रिया है, जो भाषण के अंतर्गत निम्नलिखी १६ती है। लेकिन ज्यादा अपने गार्छी को संपादित करने के लिए नभी तो भाषा का प्रयोग करता है तथा नभी भाषितरु प्रयोग। अद्यने का तात्पर्य है कि अलंकृत भाषण का उद्देश्य उच्चारित अध्यात्मा भाषण संप्रेषण एवं जीवनी आनियोग्यता का एक पाता है जिसके ज्ञान का इनकार के १५ में से १३ का बाहुँ-बाहुँ हिस्सा तथा लेकिन किसी वीज की मनानीशाता के लिए गर्दन का उच्चारण आदि भी संप्रेषण के सीमित किन्तु भाषानिक परिषेष में अत्यंत प्रयोगित साधन हैं।

भाषिक आनियोग्यता में संयार के प्रयोग को भवना दा सकता है —
भाषिक तथा लिपित।

क) भाषिक संयार :— भाषणभाषाविज्ञान के अंतर्गत संप्रेषण का एक प्रयोग अत्यंत व्यापक एवं भाषिक प्रयोगित है। महुष्य अपनी दैनिक आवश्यकताओं की दृष्टि हेतु भाषिक संयार जो ही वस्तेमाल करता है। उदाहरण स्वरूप, नातिलाप, रेडियो, टीवी, भाषण, कोर इत्यादि संयार भाषणों के भाष्यम से संयार को ज्ञान प्राप्त कुआ है। एक ज्ञान सर्वथा भाषिक ही है।

भावपूर्ण की विशेषता है। यह मानव के विकासित भास्त्रिक के कारण है, अतः किसी और प्राणी से भाषा की प्रवृत्ति वही दिखायी पड़ती भंसार में जोई भाव का अभाव वही है जो भाषा का प्रथम न करता, भंसार में जोई सामाज्य व्यवस्था वही है जो भाषा का व्यवहार न करता है। इस तरह भाषा व्यवहार तभा भाषा सिव्हन की प्रवृत्ति आवश्यक है। वस्त्या ५८८ लंबे के बाद से ही भाषा द्वारा संप्रेषण और सिव्हन की प्रवृत्ति को प्राप्ति करने लगता है।

यांस्की कहत है कि वस्त्ये के मन्त्र भाषा सिव्हन की क्षमता व्यवस्थाएँ होती हैं अर्थात् भाषा अपने जन्म की क्षमता जन्म से ही होती है। व्यवस्था में वस्त्या जो भी भाषा चुनेगा वो आसानी से सिर्वे और बल लाकरा है। क्योंकि उसके भास्त्रिक में इस व्यवस्था है। सिव्हन language Acquisition कहत है जो कि भाषा ने समझने में मदद करता है। इसके यह भी कहाया कि भाषा सिव्हने की ड्रग विवरित सीमा की होती है। भाषा व्याधिग्रहण की क्षमता जन्म से लेकर २०० तक आधिक प्रभावशाली होता है। उसके बाद भाषा सिव्हने में कठिनाई का सामना पड़ता है क्योंकि भाषा सिव्हने की क्षमता कम हो जाती है।

पाठ्यसंकी के भाषा सिद्धांत की विशेषताएँ

आधारिकान के महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से इस पाठ्यसंकी महीदल द्वारा प्रतिपादित भाषा सिद्धांत की विवरान्वित में परिलक्षित लिपा गया है:-

जन्मभास्त्र विशेषताएँ :- - पाठ्यसंकी ने प्रत्येक वस्त्या किसी भी भाषा के विकासित करने और सिव्हन की क्षमता बढ़ती ही जा सकी है और वस्त्ये जन्म से ही कुछ न कुछ सिखना है और समझना है। वस्त्यों के पास व्यवस्था में ही समझने की लाभिष्ठा जाते हैं। वस्त्या जन्म से ही

Language Acquisition Device (LAD)

पांचकी ने मात्रिक ज्ञान का समझना उत्तम है कि पहले अपने ही परिवेश को समझने के लिए आवश्यक है। और इस अभ्यन्तरीय विभाग से ही वे जाने ज्ञान लेना चाहिए। जो भाषाविदिक वर्तन्यांशों को तजी से और सहजता से सीखने में बहुत उत्तम है। पांचकी के अनुसार विभाग में एक-एक के language Acquisition Device (LAD) होता है। जो भाषा को तीव्र गति से सीखने से मदद करता है। किसी भावना हो कि अगर आधार वर्ष तक सिविल एग्जाल ट्रीक जैसा अनुभव विकासित होता है। LAD की भूमिका अभ्यन्तरीय में विशिष्ट मनुष्य काँड़ाल जो सांकेतिक शब्दों में बदलने के भाषा-साध व्याकरणीक अनुत्तिकरण वर्तन्यांश देता भी है।

सार्वभौमिक व्याकरणः

पांचकी के अनुसार जैसे-जैसे हम भाषा को सीखते हैं। किसे-किसे हमारा व्याकरण और उसके उत्तराधिकारी की भाषा भी सीखते लगती हैं। इनके अनुसार भाषा को सीखना और व्याकरण को सीखना एक सार्वभौमिक मिलता है। पांचकी के अनुसार "यह विज्ञुल समूह है कि उन्हें आनुवंशिक कारक हैं जो मनुष्य को अन्य भाषाओं से अलग बनते हैं और यह भाषा-विभिन्न है। उस आनुवंशिक घटक का विकास, यह वह उन्हें जी हो, सार्वभौमिक व्याकरण के बदलाव है।" सार्वभौमिक व्याकरण की अन्धारणा सभी भाषाओं के लिए एक समान अंतर्स्पननामक अव्यारोपण है।

भाषा अधिग्रहणः — पांचकी के अनुसार वह भाषा जो आधिग्रहण करने के लिए 2 स्तरों का उपयोग करते हैं:-

सतही वर्सपना :- - पॉर्टभकी का मानव है जिस भर्सपना में धृष्टि और आधाओं की ध्वनियों पर शब्दों का ज्ञान प्राप्त करते हैं लेकिन वे अभी इसकी समझने में असमर्पि होते हैं। किसी भी शब्द के अर्थ को विस्तृत रूप से समझाने में असफल होते हैं।

ग्राही वर्सपना :-

- पॉर्टभकी के अनुसार बल्कि अप शब्दों और शब्दियों को समझने लगता है और उसकी विस्तृत व्याख्या भी देने लगता है। इस वर्सपना में धृष्टि किसी वस्तु को परिभ्राषित करने के लिए उल्लेख शब्दों से व्याख्या कर पाते हैं। यह धृष्टि के आधारी विकास का परिपक्व रूप होता है।

आधाओं से संबंध :-

- पॉर्टभकी के अनुसार सभी आधा एक जैसी ही होती है। एक दूसरे से नहीं न जही संबंध तो होता ही है और आधा का अतिरिक्त संवार का माध्यम ही तो है। उनके अनुसार किसी भी आधा नी भेदों, किसी और विशेषण आदि के आधार पर विभिन्न किसी जो भेदों ही होता है।

प्रातःप्रकाश महेन्द्रियः :-

वर्त्या भल्ले ही language Acquisition Device (LAD) के साथ जन्म जाता है और भल्ली से आधा शिक्षण के ही क्षमता जी होती है। लेकिन अग्र अवधि वाताप्रकाश गही जिसे तो पांच आधा जही शिक्षण संकलता है। वाताप्रकाश पर निर्माण करता है कि वर्त्या कितना भल्ली जीजना शिक्षण वर्त्यों से ज्ञान जातवीत होगी तो वर्त्या भल्ली आधा, शिक्षण और गल्ली को लेंगा।

भाषा अधिग्रहण कौशल :- "पॉर्टफोली अवैज्ञानिक वेबसाइट" की अवधारणा को प्रतिपादित किया। उसके बहुत की लंबी दिखा कि थाए वर्त्ये गवर्नमेंट से ही हो भाषाओं सीखते हैं, तो उनके द्वारा मैं वारप्रवाह होते ही संआवना आधिकारी होती है।

सारंगा ११८ में कहा जाता है कि सुझाविद् आधारित और भाषी अवैज्ञानिक के प्रश्न प्रतिपादित भाषा से संबंधित शिक्षांत भाषा विकास को अनुसन्धान के द्वारा शिक्षांत है। उनके अनुसार वर्त्ये के अन्तर्गत Language Acquisition Device (LAD) होता है। जो भाषा का तीव्र गति से विकास में भाग लेता है। पॉर्टफोली भाषा विकास शिक्षांत को अपने करते हुए कहते हैं —
"इनका अवधारणा १९२० ते विले ते भाषा शिक्षण मे कठिनाई होती।"

पॉर्टफोली का भाषा अधिग्रहण की शिक्षांत यह है कि वर्त्ये भाषा शिक्षण की अनुभाव द्वयों के साथ धूप होता है। यह द्वयों में भूमिका में अद्वितीय है और यह अन्य प्राणियों में भौमिका नहीं है।

पॉर्टफोली का शिक्षांत भाषा अधिग्रहण के अन्य मनोविज्ञानिक शिक्षांत से अलग है अंतिम वह वर्त्ये की भाषा सीखने की अनुभाव भूमिका के केन्द्रित करता है, एवं कि उस १९२० वर्ष में वर्त्ये भाषा के अंक में आता है। वर्त्ये के दृश्यतात्मक भाषा का अधिग्रहण भूमिका की भाषा की लुभावी संरचना को पहचानने और व्याख्यातात्मक वर्त्ये की अनुभाव के लिए हो सकता है, संस्पन्न एवं विस्तीर्णी भी भाषा की आवश्यक भाषा का विभिन्न लकड़ती है। पॉर्टफोली ने भाषा को १९२५ वर्ष के आधारित संकालनमुक्त द्वयों के १९२५ वर्ष मात्रीय, जैविक ११८ से आधारित संकालनमुक्त द्वयों के १९२५ वर्ष मात्रीय भाषा विकास द्वारा जो कीवर्स और भौमिके सभी भूमिके भाषा और व्याकरण द्वारा जो कीवर्स और भौमिके की अनुभाव द्वयों ने साथ धूप होता है।

१) हिंदी में स्वर और व्यंजन व्यालियों का पारिचय दीजिए।

"व्यक्तिगत शर्ति व्यावरणः"

अपर्याप्त जो व्यावरण होता है उसे व्यावरण गहन है। व्यावरण जो स्वक्रिया भी करता है। व्यावरण भाषा की अध्युलाभ अथवा व्यक्ति है। अपर्याप्त व्यावरण जो विशेषताएँ हैं। सार्वजनिक व्यावरणों के नियमित रूप में वर्णन गहन है। व्यावरण भाषा की विशेषताएँ व्यावरण भाषा की विशेषताएँ हैं। व्यावरण, भाषा व व्याख्या व्यक्तिगत व्यावरण की आव्यावरणीयता होती है। व्यावरण के में से वर्ष १९५८, १९६८ और वाक्य की व्यवरण होती है। व्यावरण की इसी द्वारा व्यावरण की अपरिवर्तनीयता व्यावरण की इसी द्वारा व्यावरण की अपरिवर्तनीयता होती है। अभी भाषाओं में प्रयोगित प्रायः सभी व्यावरणों असमें ही न विद्यमान हैं। आधाविज्ञान की प्रभुरूप शास्त्रों 'व्यावरणविज्ञान' में व्यावरणों का अध्ययन किया गया। यह अध्ययन इत्यादृष्टि, सतहनि और अवण की इसी भाषा वित्तीकरण से होता है। किसी भी भाषा की व्यावरणों का विज्ञेयता तथा कानूनों किया जाता है।

हिंदी में व्यावरणों के प्रकारः— प्रथमक भाषा जी व्यावरणों की

अपर्याप्त व्यक्तिगत व्यावरण होती है। उस व्यक्तिगत

के अनुकूल तथा व्यावरणों की कौटुम्बिकता करते हुए समझा जा सकता है।

हिंदी भाषा में मुख्य २०८ से तीन प्रकार व्यावरणों पायी जाती हैं—

- ① स्वर व्यावरण
- ② व्यंजन व्यावरण
- ③ अर्थोऽपाह व्यावरण

२०८ व्यावरणः— पतंजलि के नामसार— "२०८ राजते शर्ति व्यक्ति व्यक्तशः"

अधिक जो स्वर्यं उत्पारित होती है, उसे २०८ व्यावरण कहते हैं।

"२०८ जो व्यक्ति को लाहते हैं, जिनका इत्यादृष्टि व्यक्ति से लाहते हैं।"

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, औ, ओ, ऊ, ऊ |

अवर व्याकियों की विशेषताएँ:-

- ① अवर व्याकियों के उत्पादन में वाचु प्राण अपर्युक्त होता है।
- ② अवर व्याकियों अपेलाकृत अधिक मुख्य होती है।
- ③ सभी अवर व्याकियों धार्ष होते हैं।
- ④ सभी अवर व्याकियों अल्पप्राण होते हैं।
- ⑤ नाम केवल अवर व्याकियों की होती है।
- ⑥ अवर, अकाधार वहन करने की क्षमता से छुपते होते हैं।
- ⑦ अवर व्याकियों इन उत्परित होती हैं।

अवर व्याकियों के प्रकार

* उत्पत्ति के आधार परः—

- (अ) भूल अवर — अ, इ, उ, औ
- (आ) सांघि अवर — आ, ई, ऊ
- (आ) दीर्घि अवर — आ, ई, कृ
- (थ) युण अवर — छ, ओ
- (छ) वृद्धि अवर — छ, औ

* जाति के आधार परः—

- (अ) सभातीय अवर — अ - आ
इ - ई
- (आ) विभातीय अवर — अ - इ
उ - ऊ
ऊ - ई

* ओष्ठाकृति के आधार परः—

- (क) वृत्तभुवी स्वर — उ, क, औ, औ
- (ख) सापृतभुवी स्वर — अ, इ, ई, उ, औ, औ
- (ग) त्रिलोमी स्वर — अ
- (घ) गृहीत स्वर — औ

* उत्पादण में भाषा के आधार परः—

- (क) अधु स्वर — अ, इ, ई, उ, औ
- (ख) गुरु स्वर — आ, ई, ऊ, उ, औ

* मुरण के रूपों के आधार परः—

- (क) संवृत — इ, ई, उ, क
- (ख) पिवृत — आ
- (ग) अद्वि संवृत — उ, औ
- (घ) अद्वि विवृत — ई, औ, अ

* उत्पादण में भाषा के आधार परः—

- (क) अन्त स्वर — ई, उ, औ, उ
- (ख) भव्य स्वर — अ
- (ग) प्रथ स्वर — आ, इ, ऊ, औ, औ

व्यंजन ध्वनि

"अन्वर मवति इति अंगाम्।"

अपर्यु जो अल्प नी सहायता से उत्परित होती है, उसे अंगन गहत है। "अंगन तेज ध्वनि" जो गहत है, जिसका उत्पादन एक ध्वनि की सहायता से होता है। "व्यंजनो ला उत्पादन" जबकि ५२ अंग ला वैज्ञानि से उत्पन्न की ध्वनि जैसे हुए आती है तो उसे उत्पादन कुरु - विरु में गही - न - गही आदि या संकुचित लिखा जाता है। अब केवल शर्त जिसके बाहर यह ध्वनि न किसी भाव पर उत्पन्न के साथ मुख - विरु से मुक्त विभजता है, तब व्यंजन ध्वनियों जा लियाँ होती हैं किस ध्वनियों मुख के अल्प विभजनी हैं। वज्री व्यंजन ध्वनियों मुख के अल्प जाती है। व्यंजन ध्वनियों जा उत्पादन करने के दौरान अंत में एक ध्वनि आ जाते हैं, जैसे - 'क' अंत एवं अंग के छा 'आ' जाता है। इसीलिए व्यंजन ध्वनियों को चिरों के अलग विभागों के बीच ही पिछ़े जा प्रयोग किया जाता है। एक ध्वनि 'क' को इस प्रयोग से अलग करते हैं - 'क = कृ + अ'। अतः अन्तिमिति हिन्दी की ध्वनि - व्याख्या में प्रयोग अंगन जा ध्वनि पिछ़े के साथ आना भा समाता है। प्रस्तुति में लुपिता ने आने में एक हुए ध्वनि पिछ़े जा प्रयोग नहीं किया गया है।

$$क \text{ क्ष} = क, र, ग, ध, ठ$$

$$घ \text{ क्ष} = घ, ष, झ, ख, ख$$

$$ट \text{ क्ष} = ट, च, ड, ढ, ण$$

$$त \text{ क्ष} = त, थ, द, ध, न$$

$$प \text{ क्ष} = प, फ, ब, भ, म$$

अंतर्क्ष अंगन — थ, र, ल, न

गंभ अंगन — श, ष, झ, ण, ह

मंजुन अंगन — ङ, ङ्र, ङ्ग, ङ्ञ

उत्तराधिकार व्यंग्य — ई, द

व्यंग्य क्षात्रियों ने विशेषताएँ :-

- १) व्यंग्य क्षात्रियों भृत् वृक्षियों ने महायुद्ध से उत्तराधिकार हाती हैं।
- २) व्यंग्यों के उत्तराधिकार में वायु अधिकार गति से नहीं विकास पाती है।
- ३) भारी व्यंग्य क्षात्रियों अनारक्षिक होते हैं।
- ४) व्यंग्य क्षात्रियों स्वर् वृक्षियों ने तुम्हारा से अभ मुख्यम् हाती हैं।
- ५) व्यंग्य क्षात्रियों अधिकार और महाध्वाण दोनों हाती हैं।
- ६) व्यंग्य क्षात्रियों सहीष और अधीष दोनों हाती हैं।
- ७) व्यंग्यों ने उत्तराधिकार देख लेने की जिम्मा भा सकता।

व्यंग्यों के प्रकार प्रभाव के आधार पर :-

* अधिकारी व्यंग्य — क, रू, ग, च, ख, त, थ, घ, ङ, फ, छ, झ, ञ, ल, र, न, ष, ष्ठ, ष्ठ्ठ, ष्ठ्ठ्ठ

* अधीष व्यंग्य — क, रू, ग, च, ख, त, थ, घ, ङ, फ, छ, झ, ञ, ल, र, न, ष, ष्ठ, ष्ठ्ठ, ष्ठ्ठ्ठ

* संयुक्त व्यंग्य — क, रू, ग, च, ख, त, थ, घ, ङ, फ, छ, झ, ञ, ल, र, न, ष, ष्ठ, ष्ठ्ठ, ष्ठ्ठ्ठ

* संयुक्त व्यंग्य — क, रू, ग, च, ख, त, थ, घ, ङ, फ, छ, झ, ञ, ल, र, न, ष, ष्ठ, ष्ठ्ठ, ष्ठ्ठ्ठ

* अतिथि व्यंग्य — अ, र, ल, व

* आभ व्यंग्य — श, ष, स, ह

तुलनात्मक भाषा १९वीं शताब्दी के प्रारंभ में हुआ और ३५०० से

ल्पा वास्तविक हुआ

तुलनात्मक भाषाविज्ञान, दो वा दो से अधिक भाषाओं के बीच विविध
वा प्रत्यारूप वा अविद्ययत और वह प्रत्या लगावे के लिए ३५०० की
जी जाने वाली तकनीकों के द्वारा भाषाओं का इन भाषाओं में विविध
१९वीं शती में व्याप में तुलनात्मक भाषाविज्ञान वा भाषा
महत्वपूर्ण शास्त्र थी जो तुलनात्मक भाषाविज्ञान की जहां जाने हैं।
वह अविद्ययत भूल रख से १८८५ के बाद विविध विषयों की
स्थिति से प्रेरित वा जो संस्कृत, लिंगित, ग्रीक और अंग्रेजी की संबंधित विषय

तुलनात्मक भाषाविज्ञान इन ही भाषा परिवार की भाषाओं
की संस्कृता वा अविद्ययत जैसा ही इनका आविद्यव ही इन विषय
में हुआ है कि इस दैरें कि लो-लिंग लिंगों के इन ही भाषा
परिवार की सभान ज्ञान की भाषाओं में और आदि विषयों से
भाषाओं इन इससे भी दूर होती रही। दो भाषाओं में खाड़ लगाव
लगों के आधार पर है। इसे इन भाषा परिवार के अन्तरि
म जाते हैं। इसी भाषा परिवार की भाषाओं में अंतर के आधार
पर इस उल्लेख की ओर ३५०० की गणना करते हैं। ३५००
भाषा परिवार के इतिहास वा वर्णन लगते हैं और इसके विवार
कभी को आधार पर उस भाषा परिवार के पूर्व लिपि की
गणना लगते हैं।

तुलनात्मक भाषाविज्ञान भाषा विषय के विषय का मार्गिन
वर्णन है। संस्कृत, लिंगित, ग्रीक आदि भाषाओं की तुलना से
तुलनात्मक भाषाविज्ञान का ३५०० हुआ। भाषाविज्ञान की इस
शास्त्र के अंतर्गत प्रायः इन ही भाषा परिवार की भाषा की
तुलना की जाती है। तुलना के आधार पर इस अंतर ४५००

जबकि यह पर्याप्त नहीं है, और उत्तराखण्ड राज्य की दृष्टि से परिवार की भाषाओं का गठनशीलता का प्रयोग किया जाता है। उत्तराखण्ड भाषाविज्ञान के अन्तर्गत भाषा तुलना में क्रमशः भाषाओं की विशिष्टता पर ध्यान डाला जाता है, जिसके द्वारा भूलभूत भाषाएँ की पहचान सकते हैं।

भाषाओं की तुलना के आधार पर एक ऐसी भाषा की जिसके सिद्धांत में व्याकरण एवं शब्दावली के बहुत अधिक विविध कार्य विद्युत विभिन्न से विभिन्न रूपों की दृष्टि से भाषाओं की तुलना जैविक अवधारणा के द्वारा की जाती है। भाषा तुलना आधुनिक अवधारणा के द्वारा की जाती है। इस विषय की केंद्रीय दो भाषाओं की तुलना एक ऐसी है जिसे आज के अवधारणों का इस नामा भाषाओं द्वारा किया जाता है। यह भाषाओं के अवधारणों के अवधारणों के बीच भी और भाषाओं के अवधारणों के अवधारणों के बीच भी अधिकारी तक पहुँच सकते हैं, जो भाषाविज्ञान का एक भाग है।

तुलनात्मक भाषाविज्ञान के सिद्धांतः—

तुलनात्मक भाषाविज्ञान

भाषाओं मानवविज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा है जो ज्ञाती है कि भाषाओं सभ्यता के साथ लेख व्यवस्था और विविधता होती है। 19वीं शताब्दी में चुर्च कुआ। यह भवानीत १८ से भाषाओं के बीच संवेद्यों और समानताओं का अध्ययन जरूरी है, जो एक मानव संस्कृति, प्रवासन और किसी भी महत्वपूर्ण घटनाको अवलोकित करता है। तुलनात्मक भाषाविज्ञान की तुलिकाएँ लिखाने पर निर्भर करती हैं।

तुलनात्मक विषयः — तुलनात्मक भाषाविज्ञान का प्रधानिक उपकारण
यह भवित्वात् अलगौ और समान भवित्वात्
की तुलना करने प्रोत्साहन भाषाओं के इन-इन्सार को संखेश
करता है।

भाषा परिवारः — भाषाएँ सम्बन्ध के भाषा विविध और लिङ्ग द्वारा हैं।
जिसके परिणामस्वरूप भवित्वात् भाषाओं के परिवार बनते हैं।

उपाध्यायः — लैटिन भाषाएँ :— हैं- लैटिन, लैटिनी। दूसरीपक्ष भाषाएँ :—
अंग्रेजी, अमरिन्दी, रस्ती। आर्य भाषाएँ :— अंग्रेजी, हिन्दी, भराडी।
द्रविड़ भाषाएँ :— तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम।

तुलनात्मक भाषाविज्ञान का विषयात्

दो वा दो से अधिक भाषाओं के सम्बन्ध और संबंध की विविध
करती तुलनात्मक भाषाविज्ञान का भाषाविज्ञान के लिए से अद्वितीय
शोधान रहा है।

भाषा परिवारों का विभिन्न और संबंध विवरण — विषय में
अलेक्ट्रो भाषाएँ हैं। उन भाषाओं में तुलना समाप्त होती है तो तुलना असमाप्त होती है। इसका विवरण तुलनात्मक भाषाविज्ञान में होता है।
तुलनात्मक भाषा विज्ञान का व्याप्त भाषा परिवारों का विभाजन
करने के भाषा-साध उनके संबंध और सम्बन्ध को समझता है।

अनुवाद के क्षेत्र में — भाषा विज्ञान में प्रथम विद्युतों के पास
अनुवाद का एक क्षेत्र में व्याप्ति भवित्वात् होता है। अनुवाद
के विधियां और मापदारी का उपयोग होता है। अनुवाद भा-
विद्युती भाषा के दृष्टि में भाषा विज्ञान के विभाग में भाषा की

तुलना अवधार महत्वपूर्ण होती है।

कोशाविज्ञान के क्षेत्र में — भाषा में विविध प्राचीन शब्दों के क्रियान्वयन के शिवांत और व्यवहारिक रूप को कोश विज्ञान कहते हैं। कोशाविज्ञान के क्षेत्र में विलेन आधारों का अभ्यास होता है इसलिए तुलनात्मक भाषा विज्ञान अंतर्गत महत्वपूर्ण हो जाती है।

सार्वभौम व्यापार — सार्वभौम व्यापार यही प्रथाएँ ग्रहताहूं की संप्रेषण जी इन्हियों को भाषा जी क्षेत्र से भाग आज जिससे विवार और व्यापार जी आगिनता जी मानव भाव जी भाषा के दृष्टि में देखा जा सकता। भाषा तुलना व्यापक संरक्षण में सार्वभौम व्यापार जी तलाश में एक महत्वपूर्ण गति है।

आनुवांशिक भंगण की पृष्ठाओं — यह भाषा विश्व के ग्राम आधारों जी सेवाधितता जी संवर्जित ग्रहता है। तुलनात्मक आधाविज्ञान पृष्ठति जी उद्देश्य उस प्रोते-भाषा जी पुलविभाग जी के बीच जोड़ता है। जिससे के अवतरित होते हैं।

भाषार्थी विशेषताएँ — तुलनात्मक भाषाविज्ञान के वितरित विषयों, रूपात्मक और शार्किक समानताओं पर ५० व्यापक नियम, विविध सामाजिक उपायों का उद्धार जी ज्ञातों जी ३०० कीसा आता है। तुलनात्मक पृष्ठति जी ३५५० लक्ष भाषार्थी तुलविभाग और इसके शिवांत, सभाओं और आखों विज्ञानों के बारे में जाना जा सकता है।

आधारिकान्त नी शास्त्राओं से संबंध - तुलनात्मक विद्यि आधारिकान्त के क्षेत्र में इस अवधियन पद्धति है;

जो अंतिम भवान ऐसे हृत आधारिकान्त के अन्य शास्त्राओं से
संबंध स्थापित जैसे में भूद जैसा है इसके उत्तिहासिक आधारिकान्त,
गोविकान्त, वानिविकान्त और सार्वभौम व्याख्यान नी तुलना जैसी,
सभ्य के साथ होते जाने परिवर्तितो को पहचानना और समझना सम्भव है।

सांख्यक ने जप में कह सकते हैं कि तुलनात्मक आधारिकान्त ला
गवान्त, आधारिकान्त, गोविकान्त और सार्वभौम व्याख्यान आदि आधारिकान्त
के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगान्त रहा है तुलनात्मक आधारिकान्त लगभग
इसे भी वर्ष पुश्याना अवधियन के हैं, जो आधुनिक आधारिकान्त
का दूर्घ जप है। तुलनात्मक आधारिकान्त नी सदृशता से ही जाना
ने विश्व नी सभी आधारों ला अवधियन किया, तरह परिवारों में
जैसा। तुलनात्मक आधारिकान्त के भाव्यम से न लेवल आधारों
का अवधियन किया, तरह परिवारों में जाना। तुलनात्मक आधारिकान्त
के भाव्यम से न लेवल आधारों के उत्तिहासिक संबंधों को
पुनः स्थापित किया जा सकता है, जोने उनके स्वरूप, विकास और
परिवर्तन जो भी समझा जा सकता है। तुलनात्मक आधारिकान्त
आधारों के तुलनात्मक अवधियन के भावार् ५२ मानव सशृण्टि और
सभ्यता तथा इतिहास और विजास के भाव में होनी समझ जो
प्रश्न जैसे का प्रयास जैसी है। तुलनात्मक विद्यि आधारिकों द्वारा
आधारों था जोनों के लिए उत्तिहासिक संबंधों को विधायित
करने, अभ्य के साथ उनके विजास का पता लगाते और उनके
आमत्य धूर्ध, लिंग धीरो-आधा के जप में जाना जाता है, यह
तुलनात्मक करने के लिए उपर्याग किया जाते जालन एवं भवास्थित
दृष्टिकोण है। जो आधारी विशेषताओं समानता और अंतर नी
प्रधान और विश्लेषण ५२ आधारित हैं।

(ii) लिंगालिंगित प्रैर्लों के बारे में जनक २००५-०६ में विभिन्न अनुप्रयुक्ति आधा विकास

प्रैर्ल मार्ग आगामी विकास का आवश्यकता एवं अनुप्रयुक्ति

विकास । ही, इसके अलावा आधा विकास का आवश्यकता प्रैर्ल अनुप्रयुक्ति आधा विकास है। आधा अंतर्दृष्टि अंतर्दृष्टि विकास के विषय में लीटे ५२% ने अनुप्रयुक्ति आधा विकास की व्यापत अचौही होती ही अंतर्दृष्टि में, इसका संक्षिप्त आवश्यकता होती है अधा विकास के व्यवस्था के अपेक्षा ले ही।

उपरोक्तः—

आधा विकास का अवधारणा व्यवस्था आधा विकास के लिए ने लिया जा रहा है। आधा दृष्टि के लिए विकासी, अस्थि सीखनी हो जा दृष्टि को शिखानी हो, अस्थि कार्य के लिए आधा विकास का वाल उपयोग होता है। इस अवधारणा के अंतर्गत व्यवस्था इक्षु पद्धति और पाठ्य त्रैतीयों की रूपना, तो यही अवधारणा है। इसे कार्य के लिए तुलनात्मक वर्णनात्मक-आधा विकास और आधा विकास को अनुभूदि सहायता दिते जाते हैं। विकासी व्यवस्था की अंतर्दृष्टि, कांस्ट्रीक्षी, २१२३ आदि आधारित जीवा देने के लिए इक्षु, अनोरिका, कार्ड और रूप आदि देने के व्यवस्था अनुसन्धानात्मक हो रहा है।

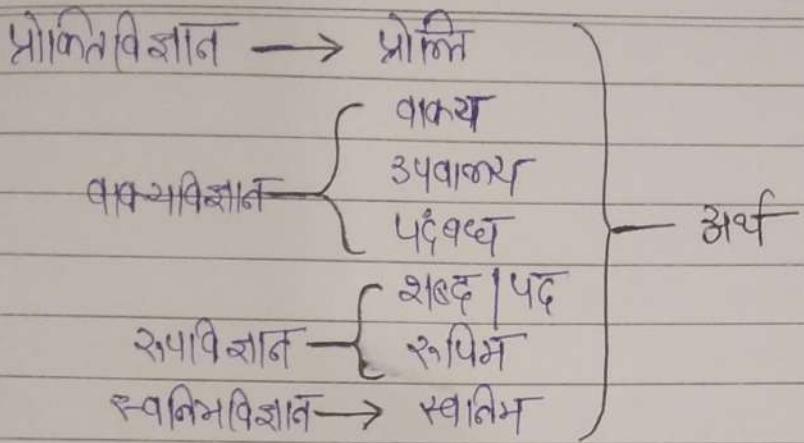
ज्ञान विधि की अवधारणा पद्धति के विभिन्न में व्यवस्था अवधारणा की एक अपेक्षा है। १९५२-१९५३ के गीजीड़ी की जन अवधारणा में भी आधा विकास का वाल आवश्यक है। आपने कुमा ने आधा विकास का भवत्व इसलिये भी कहे हैं कि १९८३ की उभारा उपरोक्त आधा विकास के अंतर्दृष्टि संवालित था यानिका अनुभाव ज्ञान विधि के लिए में भी जुता ही अवधारणा की अवधारणा है।

एक भाषा के सूचना प्रकृति वैज्ञानिक साहित्य का दूसी भाषा में भागव आस्तोक के अनुरूप ही लेखांकन जटिल (परिलक्षण चंत्रों) की अवधिता से अनुवाद ले देता एवं विवरणी-दिल अधिकाधिक संभव होता हो रहा है।

सर्वमें :-

इस विचारों की अनियन्त्रित की लिए छवनि-प्रतीकों का प्रयोग जरूर है; जिन नियन्त्रित होते हैं। भाषा उन्हें वास्तव था पाठ (प्रोलेट) के रूप में गठित ले देती है। इसी आरोग्य के अर्पि लो व्याप्ति ले देते हैं। किन्तु ऐसा नहीं होता है कि भाषा छवनियों से स्वाधी-स्वीकृत वास्तव बन दे, बल्कि इसके नियम ले देते हैं स्तरों पर नार्थ जरूर है। इन सभी स्तरों पर भाषाविज्ञान भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन जारी होता है।

विवारित सापेक्ष व्यवहार पद्धति व्यवाख्या की प्रोलेट व्यवस्थित इकाइयों में प्रयोग की इसी ले देती आधिक छवि इकाइयों (था गम से गम का) जरूर बना दे, बल्कि इसके नियम ले देते हैं स्तरों पर नार्थ जरूर है। इन सभी स्तरों पर भाषाविज्ञान भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन करता है। उन्हें हुए लम्ब में आधिक स्तर इस प्राप्त है। सामान्य आधिक व्यवहार में 'अप्ट' भाषा की भवित्व स्थिति इसी है। उस रूपों जो प्रथमा वाच्यांभक्त आरूढ़ अप्टिकूली गो से लिया जाता है वह ये संप्रेषणांभक्त हो जाता है। आरूढ़ इनका प्रयोग 'अर्पि' (अप्टिकूली विचारों) के प्रेषण और ग्रहण हुए लिया जाता है। यहाँ पर इन लात महत्वपूर्ण है ति ति 'अप्ट' भाषा है और न ही 'अर्पि'। भाषाविज्ञान में इसी व्यवहार का अध्ययन व्याख्याता के माध्यम से लिया जाता है। लिहे हैं। इस प्राप्त से दूरक लात है।



आधारिकात नी उत्तर शारणार्थे जा विवेद विवेद वैद्वतिक आधारिकात के अंतर्गत आता है। यहाँ एक अनुप्रयुक्ति आधारिकात नी पर्याप्त जा रहे हैं। आधारिकात मानव आधारों का वैज्ञानिक दृष्टि से वैद्वतिक अध्ययन जूता है। किंतु आप क्या प्रश्न कर भागते हैं कि इस अध्ययन का एक ऐसी क्या? इस प्रश्न के उत्तरका रूप क्या है? क्योंकि इस प्रश्न की जाति है, जिनमें आधा के वैद्वतिक व्याक जा उपयोग किया जाता है। उन सभी क्षेत्रों को अनुप्रयोग केर जूते हैं और उन्हें सामाजिक संपर्क से अनुप्रयुक्ति आधारिकात के अंतर्गत स्थान जाता है। इन क्षेत्रों के प्रयोग से आप और प्रश्न के अनुसार विकलितिरित तीन वर्गों में विभाजित होते हैं-

- ① व्यावहारिक अनुप्रयोग
- ② अंतरराष्ट्रीयासामिक अनुप्रयोग
- ③ लोकवीक्षणी अनुप्रयोग

व्यावहारिक अनुप्रयोग :- यहाँ पर 'व्यावहारिक' शब्द जा तात्पर्य वास्तविक जीवन में सीधे-सीधे अनुप्रयोग से है। मानव जीवन के अंतर्गत जारी रहे हैं जिनमें आधारिकात का भी आवश्यकता होती है। जो जारी रहने वाले वैज्ञानिक आधा और अध्ययन विधिवाद से जुड़े हैं, जिसे अनुवाद जा जारी, लोक विभाजन जा जारी किया। उन सभी क्षेत्रों में आधारिकात का उपयोग जूते हुए विभिन्न विभाजनों का विभाजन जा जाता है। जिन्हें वास्तविक

जीवन में देखा जाता है और प्रथाओं में भाव जाता है। जैसे 'अनुवाद' में के भाषाओं के आधारित व्याकरण जो उपर्योग किया है।

अंतर्राष्ट्रीयासाधिक अनुप्रयोगः— इस प्रकार के अनुप्रयोगों के बागानी आधारित अनुप्रयोग, जो कहा जा सकता है। भाषाविज्ञान के अंतर्राष्ट्रीयासाधिक या बालानी आधारित अनुप्रयोग जो तात्पर्य 'भाषाविज्ञान' व्याकरण जो प्रथाओं के साथ जिम्मेदार करते हुए भाषा के अभी पक्षी के लाई भी आधिक से आधिक व्याकरण आर्थित रखने से हैं।

तकनीकी अनुप्रयोगः— भाषाविज्ञान व्याकरण जो लोकीयों द्वारा भी के अनुप्रयोगात्मक पक्ष मुख्यतः लोकीयों के आनुवानिक अविज्ञानी संगठन, आमदाल और अन्य संघटित भवितों के विकास से संबंधित है। इसी शब्दों में भाषाविज्ञान जो लोकीय अनुप्रयोग डिजिटल भवितों मुख्यतः संगीकरण से जुड़ा हुआ है। आज इन्हें करते हुए संगीकरण द्वारा जो ऐसा ही ए होता है जो जीवन के अभी कोई से पुछे हुए है। इनका प्रयोग करते हुए आप हमें पहली जापानी आधिक भविता से और तीसी से अपने या भुवने व्याकरण, सम्बद्ध या सामाजिक संरक्षण पर ही संकेत है। इस "१५२-व्याकरणित" जोड़ जाता है। जापानी यह स्थिति समाजान एवं व्याकरण तक जाता है।

- अनुप्रयुक्ति विज्ञान एक ऐसा विषय है जिसका उपर्योग मौजूदा विज्ञान व्याकरण के लाभ लेने के लिए और आधिक व्याकरणिक अनुप्रयोगों के विकासित करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए — प्रौद्योगिकी या आविज्ञानिक विज्ञान में, प्राकृतिक द्रविदीय एवं व्यवहारी लोगों व्याकरण के लिए आवकासी विकासित करने के लिए द्रविदीय विज्ञान जो उपर्योग किया जाता है।
- मानविक विज्ञान में, प्राकृतिक द्रविदीय एवं व्यवहारी लोगों व्याकरण के लिए आवकासी विकासित करने के लिए द्रविदीय विज्ञान जो उपर्योग किया जाता है।

- बहुभाषिकता और द्विभाषिकता की ओर १९८० में अन्यथा जीपिए।
- भाषा मानव जीवन और समाज के प्रवार्ता की अवधिगमी है। मानक हिंदी लोष के अनुसार — "जिसी विशेष अवस्था हो रहा अपने भाव विचार आदि प्रकार करने के लिए अवश्यक में लाठ जाने वाले २०६ भाषा लाल्हाते हैं।" भाषा और समाज अन्योऽथाश्रित है, यह गहल अतिथोगमी नहीं हाँ तो भाषा के मान्यता से ही अन्याज ला गठल अपने परिवार समाज में रहता है तो उसकी मातृभाषा से अलग जीलता है और उस समाज में रहते हुए वह उसे अन्य भाषा में इतना पारंगत ले जी तभ्यु नहीं भकता है।"
- भाषा से इतर समाज से इतर भाषा के आस्तीन की जल्दाना नहीं की जा सकती। जिसी समाज में दो भाषाओं के व्यवहार की द्विभाषिकता (Bilingualism) और दो से अधिक भाषाओं के व्यवहार की ऐपिए को बहुभाषिकता (Multilingualism) जाता है। १९८८ जून २५ ईं १२५ प्रकार से दिवण भकते हैं—
- द्विभाषिकता = दो भाषाओं के व्यवहार की ऐपिए।
- बहुभाषिकता = दो भी अधिक भाषाओं के व्यवहार की ऐपिए।

द्विभाषिकता :- व्यक्ति के स्तर पर दो भाषाओं में जन्म करने की ऐपिएति जो द्विभाषिकता की लंबा दी जाती है। १२४ ऐपिएति वं व्यक्ति की एक भाषा प्रभुर्वा होती है, दूसरी गोंया। मातृभाषा के प्रदेश में मातृभाषा ही प्रभुर्वा होती है। व्यक्ति मातृभाषा से जिन इंद्रिय में रहते हों तो उसकी मातृभाषा गोंया और प्रदेश की भाषा प्रभुर्वा हो जाती है।

उमेर १९८० - थांडि कोई भासि हिंदी भाषा के भाष-भाष प्रभुर्वा जा व्यवहार करता है।

बहुआधिकार : - आधुनिक दुर्ग बहुआधिकार का दुर्ग है। भारत में विकास से ही बहुआधी देश रहा है। भारत की समस्ती जली अभद्र है कि जो यहाँ कहते हैं:— “जो भारतीय वह जले पानी, वार को भारत वह जले जली।”

उपर्युक्त - भारत का कोई व्याप्ति अदि धर्म में भविष्यी ललता है, विविधालय परिषद् में अग्रेजी तथा मण्डर में आवश्यकताएँ हिंदी या ओरपुरी का व्यवहार करते हैं।

सभापं भारत विद्यालय के आधे और जमान के लिये के संबंधी का अध्ययन और विकल्प विभाधिकार और बहुआधिकार के संबंधी के लिया जाता है। भारत का विविध अचार्य विविधता विभाधिकार और बहुआधिकार के बीच और विकल्प का प्रभुरूप उद्देश्य है। विभाधिकार और बहुआधिकार को ही के सभी ५८ दिव्य संज्ञाएँ हैं।

(क) व्यापिगत सत्र :— कोई व्याप्ति द्विभाधी (Diplopathy) या बहुआधी (Polypathy) हो सकता है। यह व्याप्ति जी विशेषता है उसका अध्ययन अल्पाद, भारत विद्यालय अदि इन अनुप्रयोग जी द्वारा जी लिया जा सकता है, किंतु भाली विशेष की द्विभाधिकार या बहुआधिकार का अध्ययन सभापं भारत विद्यालय का विषय है।

(ख) सामाजिक सत्र :— यह विभाधिकार या बहुआधिकार की वह स्थिति है, जो किसी भारत के पुरे सभाज में पार्थी जाती है।

कोई भारत नहीं है। जिस सभाज में जली जाती है वह खाली जी महाभाधी होती है, उसे उस भारत का भारत जाता है, जोसे — हिंदी भाषी सभाज
मराठी भाषी सभाज

विशेष रूप में यह अनुत्त है कि मानव सभ्यता के विकास के साथ ही मातृआत के आधारों में विवरण वृद्धि हुई और इस ग्रन्ति जीवन - मिलन भाषा समुदाय के लिए का अत्यंत तीव्रता के साथ सार्वभौमिक हुआ है। आज प्रत्येक समाज में द्विभाषिकता और लकुमाधिकारा की व्याप्ति पार्थी जाती है। लकुमाधिकारा और लकुमाधिकारा जी इस व्याप्ति के परिमाण परिवर्तन के अत्यंत द्विमुख और समुद्ध बनाया है। भारत जा "पश्चुर्ध्वं कुटुबकार्" की संकल्पना लकुमाधिकारा और द्विभाषिकता को ही परिलक्षित करती है।

- लकुमाधिकारा भाषा जा लाई जा रूप नहीं है। बालके प्रयोगताओं में द्विभाषिक आधारों की प्रयोग क्षमता है।
- "भाँक" के अनुसार दो था दो ऐ आविन आधारों जा वैकाल्पिक प्रयोग लकुमाधिकारा है।
- लकुमाधिकारा किसी भाषाघ विशेष अपवा जैसी विशेष के भाषा प्रयोग के संबंध से है।
- विद्वानों वे दो आधारों जी प्रयोग क्षमता जो द्विभाषिकता जा सकती है।
- और दो के आविक आधारों जी प्रयोग क्षमता जो लकुमाधिकारा जाए गया है।

द्विभाषिकता :- व्याकुन्त के सर पर दो आधारों में जाग करने जी व्याप्ति जो द्विभाषिकता जी संज्ञा दी जाती है। १२७ व्याप्ति में व्याकुन्त जी एक आज प्रमुख होती है, इसरी गाँव। मातृभाषा के प्रेक्षण में मातृभाषा ही प्रमुख होती है।

व्यक्ति मात्राभा के निम्न प्रदेश मे रहे तो उसके मात्राभा गांठ और प्रदेश की भाषा प्रमुख हो जाती है।

उदाहरण :- यदि कोई व्यक्ति हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी का व्यवहार करता है।

बहुभाषिकता :- अधिकाल युग बहुभाषिकता का युग है। भारत की संस्थानी इतनी समृद्ध है कि लोग यहाँ एक ही कोश-कोश पर बदले पाते, याँ जोक्स पर बदले जाते।"

उदाहरण :- भारत का कोई व्यक्ति यदि वह मे भौतिकी विज्ञान है, विश्वविद्यालय परिषद मे अग्रेजी तथा अंग्रेजी मे अध्ययन करता है तो यही या अंग्रेजी का व्यवहार करते हैं।

भभाज भाषा विज्ञान मे भाषा और भभाज के बीच के संबंधो का अध्ययन और विज्ञान विभाषिकता और बहुभाषिकता के संबंध मे किया जाता है। भाषा का विविध अपार्ट विविधता विभाषिकता और बहुभाषिकता के बीच और विज्ञान का प्रमुख उद्देश्य है। विभाषिकता और बहुभाषिकता को ही जो सर्वे पर देख सकते हैं।

(५) कोई व्यक्ति विभाषी या बहुभाषी हो सकता है। यह व्यक्ति भी विशेषता है। उसका अध्ययन अनुवाद, भाषा विज्ञान आदि मे अनुप्रयोग भी होते से किया जा सकता है।

(६) यह विभाषिकता या बहुभाषिकता भी वह व्यक्ति है, जो किसी भाषा के दुर्लभ भभाज मे पाती जाती है। कोई भाषा शुल्कः निश भभाज भी अली जाती का ग्रामी भभाज नहीं है।

3. विरोनलिएवित् पर लगभग २५० रुपये में हिन्दी लिखित।

(क) भाषा के प्रकार्य

- भाषा विचारों के आदान-प्रदान ला महत्वपूर्ण साथ हैं।
- भाषा के महत्वपूर्ण अपनी अनुश्रूतियों ('विचारों') तथा जावी गो वास्त ज्ञाताएँ।
- अपने सामाजिक संबंधों जी आजियाजी ला उपकरण भी १६ भाषा गो ही ज्ञाता हैं।
- भाषा एक और मानसिक व्यापार तो इसी और सामाजिक व्यापार से जुड़ी हैं।
- मानसिक व्यापार वित्ती व्यापार से प्रेषण व्यापार से प्रेषण व्यापार
- भाषा आधारित होता है।
- भाषा संप्रेषण ला आधार है।
- संप्रेषण व्यापार विभिन्न सामाजिक शूलिकाओं के साथ जुड़ा होता है।
- संप्रेषण व्यवस्था के विभिन्न उपकरण हैं—वक्ता और श्रीता।
- वक्ता अपनी विचारों ला श्रीता तक संप्रेषित करता है तथा श्रीता के द्वारा संप्रेषित विचारों लो ग्रहण किया जाता है, तभी भाषा ला कार्य संपादित होता है और अतचीत संभाल होती है।

प्रायिक भाषाविज्ञानिक रौमन थाकोस्ब ६२ भाषा के ६ प्रकार्यों ने बताए गई हैं। भाषा ला युल प्रकार्य संप्रेषण है। इसके लिए संप्रेषण से जुड़े ६ तर्ज अलग-अलग परिस्थितियों में जैदूर्म में आ जाते हैं। इनके जैदूर्म भे आने को ज्ञान में भाषा के प्रकार्य इस तरह हैं—

- ① श्रीजियाजीपरक प्रकार्य
- ② प्रभावपरक प्रकार्य
- ③ भाषाप्रक प्रकार्य
- ④ संदर्भप्रक प्रकार्य

1. आजियाकीरक प्रकार्थः - जब आजियाकीर्ति के कद्र में संघ 'वल्ला' होता है, तब आधा यह मनार्फ दर्शती है। इसमें वल्ला संघ से संबंधित लाते वल्ला है, जैसे —

- वाह ! कितना अच्छा भीभा है।
- आज भेष दिमाग रखराव है।
- उल्ल मुझे बुरवार आ।
- यह कितनी रक्षाव किल्म आ।

2. प्रभावपूरक प्रकार्थः - इसमें आजियाकीर्ति के कद्र में 'आता' होता है। इस प्रकार जी आजियाकीर्तियों ना उद्देश्य शोता जा प्रभावित लगा हो। आतः जब आजियाकीर्ति के प्रभुत्वतर स्वरूप आता इस किसी नार्थ जो जरूर आर्द्ध के लिए प्राप्ति होने जी स्वेच्छित प्राप्त होती है। इसमें आदेश, परामर्श, निर्देश, प्रश्न एवं संबंधित ग्राहिक आजियाकीर्तियों जो दृष्टि हैं, जैसे —

- पानी लाओ।
- खुपयाप रहो।
- आपको सज्ज के लिनारे तहलता पाहिज।
- क्या मैं अंदर आ खलता हूँ ?
- तुम्हें क्या पाहिजी।

3. कार्यालयक प्रकार्थः - इसमें आजियाकीर्ति के कद्र में 'संदेश, दातार्ह' सभी प्रकार जी आहियाय रखनारे इसके अंतर्गत आती हैं।

- सभी प्रकार जी आहियाय रखनारे इसके अंतर्गत आती हैं।
- रखनारे कुनने जो पढ़ने के बहु शोता या पाठ्य उसके अंदर जो ग्रहण करता है, जैसे — जविता।
- अतः काहा जा सकता है कि कार्यालयक प्रकार्थ जो संबंधित मानव अदेवनाओं से होता है।

4. संदर्भपूरक प्रकार्य :- यह आविष्यकों के लेन्ड्र में संभव होता है।

- इसमें वकातों द्वारा व्यक्ति और समझके के लिए ज्ञाता हो संभव में ज्ञान प्रदाता है।
- अंसे - तब लघुमान जी की सीता जी से गए। (संभव: रामायण)

5. आविभाषिक प्रकार्य :- इसमें 'लोड' लेन्ड्र में होता है। 'लोड' जा अर्थ है आविष्यकों की गई सामाजिक में प्रचुरता गई, व्यक्तियों या गों।

- यह ध्वनि शिखी तक वस्तु के बरे में सुनते या पढ़ते होते हमारे विद्यालय उस लोली या लिखी हुई सामग्री पर ही रह जाता है।
- किस आविष्यकों जो समझाने के लिए उसमें आए गए हैं, जो ही पहले समझाना प्रदाता है।
- मेसी एप्पिटि में आधा जा प्रकार्य आविभाषिक होता है, अंसे - कोई परिवाहा परने या सुनने के लिए उसमें आए गए हैं, जो अलग से समझाना प्रदाता है।

6. संबंधपूरक प्रकार्य :- यह 'सरणि' लेन्ड्र में होता है।

- यहीं वकातों और ज्ञाता के बीच एक इसहें से संबंध स्थापित करता चाहते हो या सरणि (माध्यम) जा परीक्षण जागता हो। यह प्रकार्य होता है।
- अंसे - (स्टेशन पर) ट्रेन लड़ूत जेट है, यह लड़ूत गर्भी है।
- इस प्रकार के वकातों द्वारा वकाता जो उद्दीश्य ज्ञाता से संबंध स्थापित करना मात्र रहता है।
- केवल एक इसहें से संबंध स्थापित करना चाहते हो यह सरणि (माध्यम) जा परीक्षण जागता हो।

(क्व) अर्थ परिवर्तन

- किसी शब्द के अर्थ में परिवर्तन हो जाता ही अर्थ-परिवर्तन कहलाता है। यह परिवर्तन सभ्य के साथ-साथ होता जाता है।

उदाहरणः— संस्कृत ना शब्द आकाशवाणी में। संस्कृत में इसका अर्थ 'देववाणी' है। अब आकाशवाणी ना अर्थ परिवर्तन शब्द (हिन्दी में) रेडियो (आँख बिड़िया रेडियो) हो गया है। संस्कृत ना ही दूसरा शब्द 'जंध' में।

इसका प्रयोग संस्कृत भाषा में यह के उस आग के लिए होता है जो धुत्वे से निये होते हैं, किंतु हिन्दी में यही शब्द 'जंधा' रूप में उपलब्ध है, और इसका अर्थ यह ना वह आग होता है जो धुत्वे के ऊपर होता है। 'गँवार' शब्द |पालि भाषा में प्राप्त शब्द 'ग्रामवारक' से अनुमान लगता है कि संस्कृत में यह शब्द 'ग्रामवारक'ः १६८ होगा, जिसका अर्थ यह गाँव ना १६८ वाला, गाँव का लोका अपवा गाँव वाला।| हिन्दी आदि बाध्यकानिक भाषओं में यह शब्द गवार (हिन्दी), गंयार (बंगला), गमार (गुजराती) आदि रूपों में उपलब्ध है तथा इसका अर्थ 'असम्य' और 'मुर्का' हो गया है। जिसी शब्द ना अर्थ पहले नी तुलना में अनुप्रित हो जाये वा घट जाये तो उसे अर्थ संकोष कहते हैं।

अर्थ-परिवर्तन के ग्रन्थः— भाषा में अर्थ-परिवर्तन की प्राकृतिक सतत पर्याय गई। अर्थ ना भन से सीधा संबंध है। आनंद-अनं पर विभिन्न परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है, जिसके ग्रन्थ विभिन्न शब्दों के

अर्थ-परिवर्तन की प्रक्रिया व्याप्तिगत स्तर से प्रारंभ होकर सामाजिक स्तर पर पहुँच जाती है। परिवर्तन आधारों के शब्दों में होने वाले परिवर्तन के निम्नलिखित प्रमुख लक्षण हैं—

१० भाषागत प्रयोग — मनुष्य अपनी भाषा जो अद्वे औं से से बदला यादता है। इसके लिए उन्हें भाषागत प्रयोग कहता है। ऐसे में अज्ञियंजना की वई आजीते आती है और शब्द जो अर्थ परिवर्तित हो जाता है, जैसे — दुर्दृढ़ शब्द है, वह पुरा बदल है, तुम श्रीमद् हो। इस भाषा में तुम्हें शब्द, धर्मर जो दिल, कैट जी होंगे, सुशासी जी गर्दिल आदि का आधा में भाषागत प्रयोग होने से अर्थ ने परिवर्तन हो जाता है।

③ परिवेश परिवर्तन :— परिवेश-परिवर्तन के साथ अनेक शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं। भांगालिक, सामाजिक आदिक शब्दों द्वारा परिवेश-परिवर्तनों से शब्द के अर्थ में परिवर्तन होता रहता है। भांगालिक परिवर्तन के लाभ विकास का 'ठड़ू' शब्द जो 'भैसे' के अर्थ में प्रचुरात होता था, अद में छोट प्रदेश में 'कैंट' के अर्थ में प्रचुरात होता था, लगा। सामाजिक परिवेश-परिवर्तन के लाभ स्कूल, पाठ्यालिक, महरसा आदि शब्दों के अर्थ में अप्रिवर्तन जो आभास होता है। डॉक्टर, वैद्य, दलील आदि शब्दों की अनेक सामाजिक परिवेश-परिवर्तन की देख है। भांगालिक शब्दों में होने वाले परिवर्तन से भी शब्दार्थ में परिवर्तन घटाई गिलास। अंग्रेजी का आँगत शब्द है, जो भीड़ों के गिलास के अर्थ में प्रचुरात होता था।

प्रतिश्वास - प्रदूषण :- हिमाचल, उत्तराखण्ड - प्रदूषण में आनंद

शहरों के अपीली पारिवहन औ गांवों में भूमि - धर्मी योग्यता अपने घर जो 'प्रदूषणशास्त्र' को लाने हैं। इसी गरीब के लिए जो 'प्रदूषणशास्त्र' का लाना है। इसी प्रकार 'आपकी जल है', 'जल स्वास्थ्य', 'आनादी विनाशक न हो'।

४. व्युद्ध :- व्युद्ध आधार पर उत्तर व्युद्धों के विपक्षीत अप

प्रियांकन तेरों अमार-फूलों लो वाहेव, विष्वस जो
दावविर, अंडे जो धर्म - चुर्च, धर्म वालों जो अपनाए
दीर्घाव लेते हैं, तो अपि जी विलोग चातः स्पृहं हि
प्राप्ति है। इसी प्रकार दुर्द्दल लेके जो अकुर शिव लक्ष्माण,
दूर ये जो आने वाले जो बहुत अल्पी आ गाँव, फुट जी
उत्तर ले दे बात वाले जो 'अकुर छुमिमान दो', लक्ष्मि है, जो
व्युद्ध आधार पर अपि - पारिवहन जो अलियाली वाली है,

५. शुद्धिलय :- महाद्वय श्वभव से धोति प्रभी है। अस्मालः-

अशुद्ध, प्रदूष, लुगुर्मा आदि अंदर्जली जो
भूमांस तर मेरे धोति है। इसी मेरे अस्मालः
अप्त - अस (आग) याल के लिए पारवना (पर्द रखने वाला
प्राप्त), गौद्यालय (पारिवर्त - वर्त), दिशा याल (दिशाओं वाला
प्राप्त), प्रथालय (शुद्धां नक्ष), लप्पस्त्र (स्नानावाह) आदि
इसकी जो भूमांस दोते हैं। इसी प्रकार शुद्ध - के लिए
सम्बोध, स्मृतिशेष, शुद्धांशुल आदि शब्दों के लिए

(अ) र्वैदेतर् ध्वनियों

- "द्वन् यते द्वति द्ववनिः" अप्यत् ए ध्वनित होता है, उसे ध्वनि कहते हैं। ध्वनि को स्वातिग भी कहा जाता है, अल्ले ध्वनि के आध पुष्ट अ-य तर्वों का भी प्रयोग होता है, जिससे आधा स्वामातिक नित होती है। ये तर्वों को ध्वनि-गुण र्वैदेतर् अलिलक्षण नहीं हैं।

हिंदी स्वातिग | ध्वनि दो प्रणाली के हैं—

① र्वैद्य स्वातिग | ध्वनि

ऐसी ध्वनियों जिन्हें हम स्वतंत्र रूप से उत्पादित कर सकते हैं। वे र्वैद्य स्वातिग जहलाती हैं।
एवर और अंग्रे अंग्रेज।

② र्वैद्योतर् स्वातिग | ध्वनि

जिन ध्वनियों का स्वतंत्र उत्पादन नहीं हो सकता है। वे र्वैद्योतर् स्वातिग जहलाते हैं।
भास्त्र, वलाधात, सुर, अनुनासिनता और संग्रह।

(क) मात्रा

किसी भी ध्वनि के उत्पादन में लगने वाले समय के अंदर जो विधिता या मात्रा कहा जा सकता है। गुण ध्वनियों के उत्पादन में उभ समय लगता है और गुण के उत्पादन में अपेक्षाकृत आधिक।
अर्थः— आ जी मात्रा---।

(ख) वलाधात

शब्द लगने समय अर्थ या उत्पादन जी स्पष्टा नहीं है। लिख भव इन किसी अकार पर विशेष बहु देते हैं, इन किसी नो व्वाराधात या वलाधात नहीं है।

(g) भुर या अनुतान

सामाजिकः अनुतान भुरो के उत्तर-विवाह या आरोह-अवरोह ना गम है जो इन से आधिक ध्वनियों की आधिक छाई के उत्पाद में भुला जा सकता है। भुर में इन ध्वनियों की अभावित होता है। अनुतान में इन से आधिक ध्वनियों का अभावित होता है। "अनुतान" प्रस्तुतः उस भुर जो लहर है, जिसके नाम से विवरण दिया जाए वही परिवर्तित हो जाता है।"

उदाहरणः— कथा ! — सामाजिक अपन, कथा ? — प्रश्नवाचक
अपन, कथा ! — आश्वर्यलीला अपन।

(h) अनुनासिकता

किसी भी ध्वनि के उत्पाद में जब ध्वनि भुरण के साथ-साथ नाक से भी निकले तो अनुनासिक ध्वनियों कहलाती है। ध्वनियों— सास-साँस, हँस-हँस।

(i) संगम अपना साहिता

यहाँ अपना वाक्य ने उत्पाद में सभी शब्दों के स्वरों या व्यंजनों के लिए एकत्र-स्थान के नाम आया है। अपने परिवर्तन साहिता। संगम कहलाता है।

आधा विकान में होने वर्तित ध्वनि लहर है। ये ध्वनि भुरा, बलाधात, भुर, अनुनासिकता और संगम आदि के स्वर में ध्वनियों में विधान होता है। किसी के स्वर में ध्वनियों में विधान होता है। किसी ध्वनि के उत्पाद में जितार सभी लगता है, उसे उस उस ध्वनि की मात्रा लहर है। किसी के आवाह पर एको जो उसके संग लिख लहर जाता है। किसी के स्वर में ध्वनियों में विधान होता है।

(iv) पदबंध की संज्ञाना

- वाक्य के किरणी एक समूह के पद स्थान पर वादि एवं से आधिक पदों ना समूह वही तार्थ नहीं जो अनेक एक पद तर्ह इष्ट वर्ता तो पदों के उसे समूह ना 'पदबंध' नहीं हैं पदों ना उसा बंध या समूह जो वाक्य में 'संश्ला' पद के स्थान पर प्रथमता होना वही तार्थ जहां पद जो अनेक एक 'संश्ला' पद तर्ह इष्ट वादि एवं से आधिक पदों ने उस 'बंध' को अंका पदबंध नहीं हैं।

"अब वाक्य में एक आधिक पद लिखकर उस व्याकरणिक छाई ना तार्थ करती है तो उसे बंधी हुई लोई नो पदबंध नहीं है।" डॉ. दरदेव लहरी वे 'पदबंध' के परिभाषित जाते हुए लोई कि — "वाक्य के उस आठ जो, जिसमें एक से आधिक पद परस्पर सम्बद्ध होना अर्थ तो नहीं है; किन्तु पूरा अर्थ नहीं है कि — पदबंध या वाक्यांग नहीं है।"

उदाहरण:- मौहल पाँचवीं लक्षा में पढ़ता है। (माहन -- संश्ला | अर्थ - पद) पाँचवीं लक्षा में पढ़ते वाला धात्र माहन लेहुत शुक्रमाह है। (पाँचवीं लक्षा में पढ़ते वाला धात्र -- अनेक पदों ना समूह -- पदबंध)

पदबंध के भेद

वाक्य जो सांख्य और संहित रूप कर्त्तान जैसे वाले पदबंध के पाँच धात्र होते हैं—

① संश्ला पदबंध

जब अनेक पद लिखकर किसी व्यक्ति में संख्या पद जो तार्थ नहीं है, उसे पदबंध नहीं है।

उदाहरण :— यह अनेक पद लिखकर किसी वार्ता में सहृदयों पर
जा जाए जरूर है, उसे संशोधनविधि लेने हैं। परिश्रम
करने वाला व्यापति सरल होता है। (परिश्रम करने वाला व्यापति—
संशोधनविधि)

दिन-रात में इन द्विसारे फ़सलों को उगाते हैं। (दिन-रात
में इन द्विसारे फ़सलों को उगाते हैं।)

② सर्विनाम पदविधि

वाक्य में सर्विनाम जा जाए और वाले अनेक पदों के समूह
जो सर्विनाम पदविधि जहते हैं।

उदाहरण :— तकदीर्घ जा मारा वह लीआर पड़ गया। (तकदीर्घ जा
मारा वह — सर्विनाम पदविधि)

अभ्य के पासंदी आप विलेख लेसे हुए? (अभ्य के पासंदी आप —
सर्विनाम पदविधि)

③ विशेषण पदविधि

वाक्य में ऐका अपना सर्विनाम जी विशेषता लेनाने वाले पद
समूह जो विभेदगत पदविधि जहते हैं।

उदाहरण :— एक बंग थार आप जो लिए चाहिए हैं।
(एक बंग थार — विशेषण पदविधि)

अन्याय जैसे वाले लक्ष्य जो प्राप्त जहते हैं। (अन्याय जैसे
वाले — विशेषण पदविधि)

④ क्रिया पदविधि

एक से अधिक क्रिया पदों से लगने वाले लिया रण जो
क्रिया पदविधि जहते हैं।

अप्रैल : — महान् २७ प्रत्येक वर्ष गया | (वर्ष प्रत्येक वर्ष गया — शिखा प्रदर्शन)

१०८ प्रत्येक सो गई | (प्रत्येक जी गई — शिखा प्रदर्शन)

(५) अध्ययन प्रदर्शन

वाक्यम् में अध्ययन जा जाय और उसे बढ़ावा देने का अध्ययन प्रदर्शन रहते हैं।

अप्रैल : — वह व्यक्ति-व्यक्ति जो गया | (व्यक्ति-व्यक्ति — अध्ययन) विद्यार्थी प्रते-प्रते सो गया | (प्रते-प्रते — अध्ययन प्रदर्शन)

प्रदर्शन की विधियाँ :-

(१) प्रदर्शन के वाक्यांश देता है।

(२) प्रदर्शन में इन से आविष्ट पंक्ति जो अभावेश देता है।

(३) प्रदर्शन में भुट्टे छुट्टे पदों जो समृद्ध व्याकृति देते हैं जो एप ले लेते हैं।

(४) प्रथम प्रदर्शन में एक मुख्य प्रदर्शन है और अन्य प्रदर्शन का आश्रित होता है।